ॐ

# अक्षय तृतीया विधान


रचयिता

आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज के शिष्य

**मुनिश्री सुव्रतसागरजी महाराज**



प्रस्तोता

**बा॰ ब्र॰ संजय भैया, मुरैना**

| | | |
|---|---|---|
| कृति | : | अक्षय तृतीया विधान |
| आशीर्वाद | : | संयम स्वर्ण महोत्सव मण्डित आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज |
| कृतिकार | : | अनेक विधान रचयिता बुंदेली संत मुनिश्री सुव्रतसागरजी महाराज |
| प्रसंग | : | मुनिश्री सुव्रतसागरजी महाराज का स्वर्णिम अवतरण वर्ष एवं रजत दीक्षा वर्ष 2023 |
| संयोजक | : | बा० ब्र० संजय भैयाजी, मुरैना |
| संस्करण | : | प्रथम, 1100 प्रतियाँ |
| सहयोग राशि | : | 25/- (पुनः प्रकाशन हेतु) |
| प्रकाशक | : | विद्यासुव्रत संघ |
| प्राप्ति स्थान | : | 1. बा० ब्र० संजय भैयाजी, मुरैना मोबाइल-9425128817<br>2. अमर ग्रंथालय इंदौर, 9425478846 |
| मुद्रक | : | विकास ऑफसेट, भोपाल |


## पुण्यार्जक

श्री जयकुमार-श्रीमती प्रभा, श्री राजेन्द्रकुमार-श्रीमती चंदा, श्री महावीर-श्रीमती पिंकी, श्री पदमचंद-श्रीमती शिप्रा, श्री आलोक-श्रीमती पूनम, श्री अंकित-श्रीमती रोनिका, एकता, अरिहंत, खुशी, सिद्धार्थ, अदिति, विदुषी, हर्षिता, अरिंजय जैन एवं समस्त पाटनी परिवार, नया बाजार, चोमू, जयपुर (राज०)

## अन्तर्भाव

जिनेन्द्र भगवान् की भक्ति कर्म काटने का सशक्त साधन है। जैसे लैंस के फोकस से कागज जल जाता है वैसे ही भक्ति के फोकस से हमारे कर्मरूपी कागज जल जाते हैं। भगवान् का नाम मात्र स्मरण करने से सभी किरणें फोकस बनकर पाप समूह को नष्ट करती हैं।

श्री वृषभनाथ से वर्तमान तक दान की मंगल प्रक्रिया निरंतर चली आ रही है जिसके माध्यम से श्रावकजन गुरुभक्ति करने का सौभाग्य प्राप्त कर पाते हैं। राजा श्रेयांस ने ज्येष्ठ शुक्ल तीज को प्रथम तीर्थंकर श्री वृषभदेव को इक्षु रस से सर्वप्रथम आहार कराके दानतीर्थ का प्रवर्तन किया। तब से यह दिन अक्षयतृतीया पर्व के रूप में मनाया जाता है। श्री वृषभनाथ भगवान की भक्ति करने का यह नया सोपान **संत शिरोमणि परमपूज्य आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज** के सुयोग्य शिष्य **अनेक विधान रचयिता बुंदेली संत पूज्य मुनिश्री सुव्रतसागरजी महाराज** ने प्रस्तुत कृति **'अक्षय तृतीया विधान'** की रचना करके हम सबको दिया है जो कि भक्त को जन्म-जरा और मृत्यु से मुक्ति दिलाने वाला एवं अतिशय पुण्य को बढ़ाने वाला है।

जिन लोगों ने इस कृति में जो भी सहयोग किया उन सबके लिए बहुत-बहुत साधुवाद। सभी भगवान् की भक्ति करके अपूर्व पुण्यार्जन करेंगे इसी भावना के साथ सभी को सादर जय-जिनेन्द्र!

**तुम्हें सारथी बना लिया है, मोक्षपुरी के गजरथ का।**
**तुरत हमें दर्शन करवा दो, शुद्धातम के तीरथ का॥**
**कहो कहाँ हस्ताक्षर कर दें, हमको भी स्वीकार करो।**
**भक्त खड़े नत हाथ जोड़कर, हम सबका उद्धार करो॥**

**— बा॰ ब्र॰ संजय, मुरैना**

## मंगल मंत्र

धर्म चाहने वाले बोलें, ओम् णमो अरिहंताणं।
मोक्ष चाहने वाले बोलें, ओम् णमो सिद्धाणं।
दीक्षा चाहने वाले बोलें, ओम् णमो आइरियाणं।
शिक्षा चाहने वाले बोलें, ओम् णमो उवज्झायाणं।
शान्ति चाहने वाले बोलें, ओम् णमो लोए सव्वसाहूणं॥
जिनशासन के दर्शक बोलें, ऐसो पंच णमोयारो।
नवदेवों के सेवक बोलें, सव्व पावप्पणासणो।
सिद्धों के आराधक बोलें, मंगलाणं च सव्वेसिं।
शुद्धातम के भावक बोलें, पढमं होई मंगलम्॥

## मंगल भावना

तेरा मंगल मेरा मंगल, सबका मंगल होवे।
सुखिया होवे सारी दुनियाँ, कोई दुखी न होवे॥
कण-कण मंगल क्षण-क्षण मंगल, जन-जन मंगल होवे।
हे प्रभु! निजमंगल के पहले, जग का मंगल होवे॥ १॥ तेरा...
जिन माँ बापू ने जन्मा है, उनका मंगल होवे।
जिन बन्धु ने पाला पोषा, उनका मंगल होवे॥
जिन मित्रों ने हमें सम्हाला, उनका मंगल होवे।
जिन गुरुओं ने ज्ञान दिया है, उनका मंगल होवे॥ २॥ तेरा...
हम जिस दुनियाँ में रहते हैं, उसका मंगल होवे।
हम जिस भारत देश में रहते, उसका मंगल होवे॥
हम जिस राज्य प्रान्त में रहते, उसका मंगल होवे।
हम जिस नगर शहर में रहते, उसका मंगल होवे॥ ४॥ तेरा...

===

## श्री नवदेवता पूजन

(हरिगीतिका)

जब प्रार्थना को कर जुड़े तो, आतमा आकुल हुई।
जब वन्दना को पग उठे तो, वेदना व्याकुल हुई॥
जब साधना को सुर सजे तो, गुनगुनाएँ गीत हम।
जब अर्चना को मन हुआ तो, आ गए जिन-तीर्थ हम॥
अरिहन्त सिद्धाचार्य गुरु-उवझाय साधु जिन-धरम।
जिन-शास्त्र-प्रतिमाएँ जिनालय, देवता ये नव परम॥
नव देवताओं की करें हम, अर्चना पूजें चरण।
बस प्रार्थना हम भक्त की सुन, दीजिए हमको शरण॥

(दोहा)

नव देवों को हम भजें, करें-करें आह्वान।
हृदयासन आसीन हों, भक्तों के भगवान॥

**ॐ ह्रीं श्री अर्हत्-सिद्धाचार्य-उपाध्याय-सर्वसाधु-जिनधर्म-जिनागम-जिनचैत्य-चैत्यालय समूह अत्र अवतर-अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...।** (पुष्पांजलिं...)

(सखी)

अपने ही हमको जन्में, फिर मारें और जलाएँ।
फिर पीछे आँसु बहाके, कर हाय! हाय! चिल्लाएँ॥
मृग मरीचिका अपनों की, तुम सम तजने जल लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

**ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं...।**

हम करें भरोसा जिन पर, वे धोखे हमको देते।
हम दिल में जिन्हें वसाएँ, वे राख हमें कर देते॥

तुम सम अपनों की तृष्णा, हम तजने चंदन लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

**ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यः संसारतापविनाशनाय चंदनं...।**

हम जिनको गले लगाएँ, वे गला हमारा घोंटें।
वे हमको खूब रुलाएँ, हम जिनके आँसू पोंछें॥
यह अपनों की आकुलता, तजने हम अक्षत लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

**ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्...।**

अपने ही फाँसी दें फिर, फोटो पर माला डालें।
वाणी के बाण चलाके, चित् छिन्न-भिन्न कर डालें॥
तुम सम अपनों के काँटे, तजने पुष्पों को लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

**ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यः कामबाणविध्वंसनाय पुष्पाणि...।**

खुद भूखे प्यासे रहकर, अपनों की भूख मिटाई।
जीवन में विष वे घोलें, जिनको दें दूध मलाई॥
विश्वासघात अपनों का, सहने नैवेद्य चढ़ाएँ।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

**ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं...।**

गोदी में जिन्हें खिलाएँ, हम काजल जिन्हें लगाएँ।
हथकड़ी बेड़ियाँ वे दें, हम चलना जिन्हें सिखाएँ॥
यों तजें मोह माया ज्यों, तुम तज निजदीप जलाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

**ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीपं...।**

घर जिनका यहाँ वसाकर, जी-जान जिन्हें हम सौंपें।

वे घर-घर हमें फिराएँ, सब पाप हमीं पर थोपें॥
बेरुखी तजें अपनों की, सो धूप भूप को लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

**ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं...।**

बदनाम हुए हम जिनको, बदनाम हमें वे करते।
सुख चैन वही तो छीनें, फिर हम क्यों उन पर मरते॥
अपनों की आँख-मिचौली, तुम सम तजने फल लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

**ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं...।**

हम जिनको सगा समझते, वे देकर दगा दबाएँ।
फिर देकर दाग जलाएँ, हम जिन पर प्राण लुटाएँ॥
ये दाग दगा अपनों के, तजने को अर्घ्य चढ़ाएँ।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

**ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।**

**जयमाला** (दोहा)

जिननवदेवा पूज्य हैं, जिन की जोड़ न तोड़।
अतः कहें जयमालिका, हाथ जोड़ सिर मोड़॥

**(भुजंगप्रयात)**

जितेन्द्री हितैषी अरिहन्त प्यारे, हमें तारते सो नमोऽस्तु हमारे।
निकर्मा सभी सिद्ध शुद्धात्म धारे, तुम्हीं भक्त के लक्ष्य वन्दन हमारे॥ १॥
परम पूज्य आचार्य दीक्षादि दानी, यथाजात रत्नत्रयी को नमामि।
हमें मोक्ष का मार्ग दें तत्त्वज्ञानी, नमोऽस्तु तुम्हें हो उपाध्याय स्वामी॥ २॥
दिगम्बर निरम्बर चिदातम विहारी, सभी साधुओं को नमोऽस्तु हमारी।
यही पंचपरमेष्ठी आदर्श अपने, इन्हें पूजने से हुए पूर्ण सपने॥ ३॥

सदा चक्र जिनधर्म का ही चलेगा, इसी से चिदानन्द हमको मिलेगा।
जिनागम करें पूर्ण अध्यात्म शान्ति, हरें मोह मिथ्यात्व अज्ञान भ्रांति॥ ४॥
जगत् पूज्य जिनबिम्ब हैं चैत्य साँचे, करें दर्श तो भक्त भक्ति से नाँचें।
कृत्रिम अकृत्रिम जिनालय हमारे, समोसर्ण जैसे हमें हैं सहारे॥ ५॥
यही देवता हैं नवों पूज्य स्वामी, इन्हीं की कृपा से मिले मुक्तिरानी।
इन्हीं के मिलें दर्श जब पुण्य जागें, इन्हें पूजने से सभी कष्ट भागें॥ ६॥
जपें जाप तो शुद्ध आतम बनेगी, धरें ध्यान तो ज्ञान ज्योति जलेगी।
अतः प्राप्त छाया इन्हीं की हमें हो, इसी से नमोऽस्तु सदा ही इन्हें हो॥ ७॥
हमें प्राप्त रत्नत्रयी धर्म होवे, पुनः भेद विज्ञान से कर्म खोवें।
नवों देवता से धरें प्रेम हम भी, बनें संत अरिहंत फिर सिद्ध हम भी॥ ८॥
हमें रूप सत्यं शिवं सुन्दरं दो, चले आए हम भी तभी मंदिरं को।
कि जब तक यहाँ चाँद तारे रहेंगे, सदा गीत 'सुव्रत' तो गाते रहेंगे॥ ९॥

(दोहा)

मुक्तिरमा के धाम हैं, चित् चैतन्य मुकाम।
परमपूज्य नवदेव को, बारम्बार प्रणाम॥

**ॐ ह्रीं श्री अर्हत्-सिद्धाचार्य-उपाध्याय-सर्वसाधु-जिनधर्म-जिनागम-जिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं---।**

(दोहा)

करें पूज्य नवदेवता, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान॥

**(शान्तये शान्तिधारा)**

कल्पवृक्ष के पुष्पसम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, नवदेवा जिनराय॥

**(पुष्पांजलिं...)**

===

## अर्घ्यावली

### अकृत्रिम चैत्यालय का अर्घ्य (ज्ञानोदय)

अर्हंतों बिन जिन बिम्बों से, धर्म ध्यान हम करते हैं।
बिम्ब बिना चैत्यालय सुन लो, भक्त न पूजा करते हैं॥
अर्घ्य चढ़ा के मंदिर पूजें, तारणतरण खिवैया सा।
अकृत्रिम चैत्यालय भज के, पाएँ तीर तिरैया सा॥

**ॐ ह्रीं श्री अकृत्रिम चैत्यालय सम्बन्धी जिनबिम्बेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।**

### विद्यमान बीसतीर्थंकर का अर्घ्य (दोहा)

विद्यमान तीर्थंकरा, विदेहक्षेत्र के बीस।
आत्म द्रव्य के लाभ को, करें नमोऽस्तु धर शीश॥

**ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थ विद्यमानविंशति तीर्थंकरेभ्यः पूर्णार्घ्यं...।**

### सिद्धपरमेष्ठी का अर्घ्य (सखी)

कर नष्ट अष्ट कर्मों को, तुमने निज नगर वसाया।
तब मुक्तिवधू ने तुमको, झट अपने गले लगाया॥
इस देह नगर की दुनियाँ, अपने सम दूर करा दो।
अर्घ्यार्पण करें नमोऽस्तु, हमको भी सिद्ध बना लो॥

**ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं अनन्तानन्त सिद्धपरमेष्ठिभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।**

### चौबीसी का अर्घ्य

(लय–चौबीसी वत्...)

यह अर्घ्य करो स्वीकार, आतम के रसिया।
हम पाएँ आत्म फुहार, सींचें निज बगिया॥
तीर्थंकर प्रभु चौबीस, आत्मिक शान्ति भरें।
हमको दे दो आशीष, हम तो नमोऽस्तु करें॥

**ॐ ह्रीं श्री वृषभादिवीरान्तेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।**

## तीस चौबीसी का अर्घ्य

(सखी)

नहिं केवल अर्घ्य चढ़ाने, नहिं श्रेष्ठ पदों को पाने।
बस तीस चौबीसी भजने, हम आए नमोऽस्तु करने॥

**ॐ ह्रीं तीस चौबीसी सम्बन्धी सप्तशत विंशति तीर्थंकरेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।**

## श्रीआदिनाथ स्वामी अर्घ्य

(शुद्ध गीता)

मिलाकर आठ द्रव्यों को, बनाया अर्घ्य मनहारी।
बिठा दो आठवी भू पर, नशें दुख द्वन्द्व दुखकारी॥
प्रभो! आदीश की अर्चा, करें हम आज तन-मन से।
सुनो! अब प्रार्थना स्वामी, हरो संकट भगत जन के॥

**ॐ ह्रीं श्रीवृषभनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।**

## श्री चन्द्रप्रभ स्वामी अर्घ्य

(ज्ञानोदय)

अष्ट अंगमय नमस्कार कर, अष्ट शुद्धिमय आए हम।
अष्ट कर्म को हरने स्वामी, अष्ट द्रव्य भी लाए हम॥
अष्टम वसुधा मिलती अष्टम-चन्द्रप्रभु की पूजन से।
यश वैभव उत्तम पद मिलते, सविनय अर्घ्य समर्पण से॥

**ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।**

## श्री शान्तिनाथ स्वामी अर्घ्य

(शंभु)

है तीन लोक में शान्ति कहाँ, है शान्ति कहाँ जड़ पुद्गल में।
है तीन काल में शान्ति कहाँ, है शान्ति कहाँ जग दलदल में॥

अपने सम विघ्न अशान्ति हरो, अर्घों सी शान्ति करो आहा।
ओम् ह्रीं शान्तिनाथ जिनेन्द्राय, शान्तिं शान्तिं कुरु कुरु स्वाहा॥

**ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।**

## श्री नेमिनाथ स्वामी अर्घ्य

**(लय : श्री सिद्धचक्र का पाठ...)**

श्री नेमिप्रभु के पर्व, चढ़ा के अर्घ्य, सर्व कल्याणी।
हम करें नमोऽस्तु स्वामी॥
प्रभु देख प्राणियों का क्रंदन, झट तजे राज राजुल बन्धन।
फिर माँ-बाबुल का तज के दाना पानी, प्रभु बने भेद विज्ञानी।
श्री नेमिप्रभु के....॥

**ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।**

## श्री पार्श्वनाथ स्वामी अर्घ्य

**(ज्ञानोदय)**

द्रव्य मिला वसु अर्घ्य बनाए, भक्त मूल्य इसका जानें।
ऋद्धि-सिद्धि मंगलमय सक्षम, इच्छा पूरक भी मानें॥
अर्घ्य चढ़ा अनर्घपद पाने, पार्श्वनाथ को हम ध्याएँ।
भयहर! हे उपसर्ग विजेता!, भक्तों के मन वस जाएँ॥

**ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।**

## श्री महावीर स्वामी अर्घ्य

**(ज्ञानोदय)**

हम तो एक जमीं के कण हैं, तीन लोक के तुम स्वामी।
अपना जीवन निंदित है पर, श्रेष्ठ पूज्य तुम जगनामी॥
ओस बूँद हम रत्नाकर तुम, रत्नों से झोली भर दो।
हम तो अर्घ्य चढ़ाएँ सादर, नजर दया की तुम कर दो॥

**ॐ ह्रीं श्रीमहावीर जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।**

## बाहुबली भगवान का अर्घ्य (शंभु)

वैराग्य तुम्हारा देखा तो, भरतेश झुके भू अम्बर भी।
तब मुक्तिवधू नत नयना हो, वरमाला करे स्वयंवर भी॥
हो काश! हमारा भी ऐसा, सो अर्घ्य मनोहर अर्पित है।
प्रभु बाहुबली को नमोऽस्तु कर, चरणों में भक्ति समर्पित है॥

**ॐ ह्रीं श्री बाहुबली जिनेन्द्राय अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।**

## सोलहकारण का अर्घ्य (आंचलीबद्ध चौपाई)

प्रासुक द्रव्य मिलाकर आठ, अर्घ्य बना करलें जिन पाठ।
करें कल्याण, पूजन कर पाएँ निर्वाण॥
भजें भावना सोलह रोज, तीर्थंकर पद की हो खोज।
बनें जिनराज, सो नमोऽस्तु कर पूजें आज॥

**ॐ ह्रीं श्री दर्शनविशुद्ध्यादि षोडशकारणेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।**

## पंचमेरू का अर्घ्य

पंचमेरू जिनशासन पर्व, भक्त चढ़ाके जिनको अर्घ्य।
करें त्यौहार, कर लें प्रभु सा निज उद्धार॥
पंचमेरू मंदिर जिन ईश, आठ हजार छह सौ चालीस।
भजें सुर लोग, कर नमोऽस्तु पूजें हम लोग॥

**ॐ ह्रीं श्री पंचमेरूसंबंधि-जिनचैत्यालयस्थ-जिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं...।**

## नंदीश्वर का अर्घ्य

यह अर्घ्य दिखे कमजोर, पर बलवान बड़े।
जो खींचे प्रभु की ओर, सो हम आन खड़े॥
हम दुख संकट लें जीत, निज पर राज करें।
छप्पन सौ सोलह बिम्ब, नंदीश्वर सोहें॥

**ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वरद्वीपे द्विपंचाशज्जिनालयस्थ जिनप्रतिमभ्यो अर्घ्यं...।**

## दसलक्षण का अर्घ्य (सखी)

यह अर्घ्य चढ़ा हो जादू, झट धर्म बना दे साधु।
ले पिछी कमण्डल डोलें, पट मोक्षमहल के खोलें॥
दसलक्षण के केशरिया, हम रंग में रंगने आए।
पूजा में करके नमोऽस्तु, दस धर्म मनाने आए॥

**ॐ ह्रीं उत्तमक्षमादि दशलक्षणधर्मेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।**

## रत्नत्रय का अर्घ्य (ज्ञानोदय)

उपसर्गों से परीषहों से, डरकर रत्नत्रय न लिया।
हीरे जैसा मानव जीवन, कौड़ी जैसा गवां दिया॥
जड़ द्रव्यों के विकल्प तज के, चेतन धाम मिले हमको।
सो यह अर्घ्य करें हम अर्पित, हो नमोऽस्तु रत्नत्रय को॥

**ॐ ह्रीं श्री सम्यक्रत्नत्रयाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।**

## जिनवाणी का अर्घ्य (त्रिभंगी)

जिनवाणी मैया, संयम नैया, दे के भैया, मुक्त करें।
सो करें सवारी, हों अनगारी, मुक्ति नारी, प्राप्त करें॥
तीर्थंकर वाणी, सुनकर ज्ञानी, गणधर स्वामी, श्रुत रचते।
माँ सरस्वती हम, पाने आतम, अर्घ्य से अर्चन, अब करते॥

**ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भव सरस्वतीदैव्यै अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।**

## सप्तर्षि का अर्घ्य (दोहा)

श्री मनु स्वरमनु श्रीनिचय, सर्वसुन्दर जयवान।
विनयलालस जयमित्रजी, भजें सप्तऋषि नाम॥

**ॐ ह्रीं श्री मनु स्वरमनु श्रीनिचय सर्वसुन्दर जयवान विनयलालस जयमित्राख्य-चारणऋषिभ्यो नमः अर्घ्यं...।**

## निर्वाणक्षेत्र का अर्घ्य (शुद्ध गीता)

उसी मय आत्मा होती, जिसे जो चाहते मन से।
किया जब ध्यान सिद्धों का, मिले सो सिद्ध भगवन से॥
करें शुद्धात्म सिद्धों सम, अतः यह अर्घ्य अर्पित है।
भजें निर्वाण क्षेत्रों को, नमोऽस्तु भी समर्पित है॥

**ॐ ह्रीं अर्हं श्री निर्वाणक्षेत्रात् मुक्तिप्राप्त मुनिभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।**

## श्री सम्मेदशिखर का अर्घ्य (शंभु)

सम्मेदशिखर का तीरथ तो, सब तीर्थों का ही सार रहा।
सो इसकी तीर्थ वन्दना बिन, हम समझें सब निस्सार रहा॥
अब अर्घ्य चढ़ा हर टोंकों को, कर परिक्रमा निज खोज रहे।
सो कहें णमो सिद्धाणं हम, सम्मेदशिखर को पूज रहे॥

**ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्रेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।**

## आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज का अर्घ्य (ज्ञानोदय)

अतुलनीय विद्यागुरुवरजी, तुल न सके उपकरणों से।
सब उपमाएँ फीकी पड़तीं, सज न सके आभरणों से॥
यूँ तो गुरु के सिर पर कोई, ताज नहीं आवाज नहीं।
पर ऐसा है कौन यहाँ दिल, जिस पर गुरु का राज नहीं॥

**ॐ ह्रूं आचार्य गुरुवर श्रीविद्यासागर मुनीन्द्राय अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।**

## मुनि श्री सुव्रतसागरजी महाराज का अर्घ्य

अष्ट द्रव्य ले सोच रहे हम, और समर्पित क्या कर दें।
तन मन जीवन गुरु चरणों में, जल्दी अर्पित हम कर दें॥
गुरु चरणों के योग्य बनें हम, सुव्रत दान हमें दे दो।
कर नमोऽस्तु यह अर्घ्य चढ़ाएँ, अपनी शरण हमें ले लो॥

**ॐ ह्रः श्री सुव्रतसागर मुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।**

===

## अक्षय तृतीया पूजन

**स्थापना (दोहा)**

अक्षयतीजा पर्व है, जग में पूज्य महान।
आदिप्रभु को नमोऽस्तु कर, पाएँ अक्षय दान॥

**(ज्ञानोदय)**

इस युग के जब आदि प्रवर्तक, दीक्षित होकर संत हुए।
किन्तु वर्ष भर मिला न भोजन, अंतराय के उदय हुए॥
तब श्रेयांस सोम राजा दे, दान पारणा झूम उठे।
दान तीर्थ का हुआ प्रवर्तन, अक्षय-तीजा पूज झुके॥

**(दोहा)**

तीज शुक्ल वैशाख की, जग में हुई महान।
आदि प्रभु को हम भजें, हृदय वसो भगवान॥

**ॐ ह्रीं दानतीर्थ अक्षयतृतीया पर्वप्रदाता श्री वृषभनाथ-जिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...।**
**(पुष्पांजलिं...)**

तद्भव मोक्षगामि के भी तो, जन्म मरण आदिक होते।
फिर क्या होगा अपना जीवन, इसे व्यर्थ क्यों हम खोते॥
प्रासुक जल ले अक्षय-तीजा, आदिनाथ को हम पूजें।
श्री श्रेयांस सोम राजा सम, नमोऽस्तु अपने भी गूँजें॥

**ॐ ह्रीं दानतीर्थ अक्षयतृतीया पर्वप्रदाता श्री वृषभनाथ-जिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्यु-विनाशनाय जलं...।**

आदिनाथ ने बना अंजुली, पाणिपात्र फैलाया ज्यों।
हुआ मान का मर्दन देखो, शीतल स्वभाव पाया त्यों॥
सो चंदन ले अक्षय-तीजा, आदिनाथ को हम पूजें।
श्री श्रेयांस सोम राजा सम, नमोऽस्तु अपने भी गूँजें॥

**ॐ ह्रीं दानतीर्थ अक्षयतृतीया पर्वप्रदाता श्री वृषभनाथ-जिनेन्द्राय संसारताप-विनाशनाय चंदनं...।**

धर्मतीर्थ विच्छेद हुआ पर, दानतीर्थ अक्षय दौड़े।
अक्षय-तीजा पर्व उसी का, सिद्धों से नाता जोड़े॥
सो अक्षत ले अक्षय तीजा, आदिनाथ को हम पूजें।
श्री श्रेयांस सोम राजा सम, नमोऽस्तु अपने भी गूँजें॥

**ॐ ह्रीं दानतीर्थ अक्षयतृतीया पर्वप्रदाता श्री वृषभनाथ-जिनेन्द्राय अक्षयपद-प्राप्तये अक्षतान्...।**

शील व्रतों का अखण्ड पालन, तीर्थंकर पद दान करे।
फिर भी केवल ज्ञान बिना यह, मुक्तिवधू में नहीं रमे॥
अतः पुष्प ले अक्षय-तीजा, आदिनाथ को हम पूजें।
श्री श्रेयांस सोम राजा सम, नमोऽस्तु अपने भी गूँजें॥

**ॐ ह्रीं दानतीर्थ अक्षयतृतीया पर्वप्रदाता श्री वृषभनाथ-जिनेन्द्राय कामबाण-विध्वंसनाय पुष्पाणि...।**

तीव्र असाता शर्मिंदा कर, भूखे प्यासे भटकाये।
हाय! हाय! यह कैसे छूटे, जिससे कोई न बच पाए॥
ले नैवेद्यक अक्षय-तीजा, आदिनाथ को हम पूजें।
श्री श्रेयांस सोम राजा सम, नमोऽस्तु अपने भी गूँजें॥

**ॐ ह्रीं दानतीर्थ अक्षयतृतीया पर्वप्रदाता श्री वृषभनाथ-जिनेन्द्राय क्षुधारोग-विनाशनाय नैवेद्यं...।**

भोगभूमि का हुआ समापन, सूर्य चाँद तब प्रकट हुए।
भव्य जनों के पुण्योदय से, धर्म दीप भी उदित हुए॥
अतः दीप ले अक्षय-तीजा, आदिनाथ को हम पूजें।
श्री श्रेयांस सोम राजा सम, नमोऽस्तु अपने भी गूँजें॥

**ॐ ह्रीं दानतीर्थ अक्षयतृतीया पर्वप्रदाता श्री वृषभनाथ-जिनेन्द्राय मोहान्धकार-विनाशनाय दीपं...।**

कर्मोदय से आदिनाथ भी, विषयों के व्यापार किए।
आत्मज्ञान पा हुए विरागी, कर्मों का संहार किए॥
अतः धूप ले अक्षय-तीजा, आदिनाथ को हम पूजें।
श्री श्रेयांस सोम राजा सम, नमोऽस्तु अपने भी गूँजें॥

**ॐ ह्रीं दानतीर्थ अक्षयतृतीया पर्वप्रदाता श्री वृषभनाथ-जिनेन्द्राय अष्टकर्म-दहनाय धूपं...।**

आदिनाथ जी किए तपस्या, मोक्षमार्ग सबने पाया।
पर निमित्त के फल से अपना, उपादान तक सुख पाया॥
सो लेकर फल अक्षय-तीजा, आदिनाथ को हम पूजें।
श्री श्रेयांस सोम राजा सम, नमोऽस्तु अपने भी गूँजें॥

**ॐ ह्रीं दानतीर्थ अक्षयतृतीया पर्वप्रदाता श्री वृषभनाथ-जिनेन्द्राय मोक्षफल-प्राप्तये फलं...।**

अहो! ज्ञान की महिमा देखो, पंचाश्चर्य प्रकट होते।
जय हो! जय हो! यशोगान कर, पवित्र आतम घट होते॥
अतः अर्घ्य ले अक्षय-तीजा, आदिनाथ को हम पूजें।
श्री श्रेयांस सोम राजा सम, नमोऽस्तु अपने भी गूँजें॥

**ॐ ह्रीं दानतीर्थ अक्षयतृतीया पर्वप्रदाता श्री वृषभनाथ-जिनेन्द्राय अनर्घपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।**

## पंचकल्याणक अर्घ्य

(दोहा)

दोज कृष्ण आषाढ़ को, सर्वारथ सुर त्याग।
गर्भ वसे मरुमात के, 'जिन' से है अनुराग॥

**ॐ ह्रीं आषाढ़कृष्णद्वितीयायां गर्भमङ्गलमण्डिताय दानतीर्थ अक्षयतृतीया पर्वप्रदाता श्रीवृषभनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।**

नाभिराय के आँगने, जन्म लिए भगवान्।
चैत्र कृष्ण नवमी हुई, जग में पूज्य महान्॥

**ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णनवम्यां जन्ममङ्गलमण्डिताय दानतीर्थ अक्षयतृतीया पर्वप्रदाता श्रीवृषभनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।**

चैत्र श्याम नवमी दिना, बने दिगम्बर नाथ।
मोह तजा आतम भजा, जिन्हें नमें नत माथ॥

**ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णनवम्यां तपोमङ्गलमण्डिताय दानतीर्थ अक्षयतृतीया पर्वप्रदाता श्रीवृषभनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।**

ग्यारस फाल्गुन कृष्ण में, घातिकर्म सब नाश।
बने केवली लोक ये, नम्र हुआ बन दास॥

**ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्ण-एकादश्यां ज्ञानमङ्गलमण्डिताय दानतीर्थ अक्षयतृतीया पर्वप्रदाता श्रीवृषभनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।**

माघ कृष्ण चौदस दिना, हरे कर्म का भार।
हिमगिरि से शिवपुर गए, हम पाए त्यौहार॥

**ॐ ह्रीं माघकृष्णचतुर्दश्यां मोक्षमङ्गलमण्डिताय दानतीर्थ अक्षयतृतीया पर्वप्रदाता श्रीवृषभनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।**

## विधान अर्घ्यावली (जोगीरासा)

खाद्य स्वाद्य वा लेय पेय का, चार तरह आहारा।
दान चतुर्विध व्रती संघ को, देना है त्यौहारा॥
इक्षु रस का द्रव्य दान दे, अखती-पर्व मनाएँ।
वृषभनाथ को करके नमोऽस्तु, सादर अर्घ्य चढ़ाएँ॥

**ॐ ह्रीं णमो जिणाणं दानतीर्थ योग्य अक्षयतृतीया पर्वप्रदाता श्री वृषभनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥१॥**

### सोला के अर्घ्य

आटे दाल आदि मर्यादित, प्रासुक शुद्ध बना के।

**अन्न शुद्धि** के योग्य ध्यान से, निज कर्तव्य निभा के॥
द्रव्य शुद्धि से द्रव्य दान दे, अखती-पर्व मनाएँ।
वृषभनाथ को करके नमोऽस्तु, सादर अर्घ्य चढ़ाएँ॥

**ॐ ह्रीं णमो ओहि जिणाणं अन्न-आपद-विनाशक अन्न-द्रव्यशुद्धि-योग्य अक्षयतृतीया पर्वप्रदाता श्री वृषभनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥२॥**

जीवाणी लायक मर्यादित, प्रासुक नीर बना के।
**नीर शुद्धि** के योग्य ध्यान से, निज कर्तव्य निभा के॥
द्रव्य शुद्धि से द्रव्य दान दे, अखती-पर्व मनाएँ।
वृषभनाथ को करके नमोऽस्तु, सादर अर्घ्य चढ़ाएँ॥

**ॐ ह्रीं णमो परमोहि जिणाणं जल-आपद-विनाशक जल-द्रव्यशुद्धि-योग्य अक्षयतृतीया पर्वप्रदाता श्री वृषभनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥३॥**

जल आहार पकाने लायक, प्रासुक अग्नि बना के।
**अग्नि शुद्धि** के योग्य ध्यान से, निज कर्तव्य निभाके॥
द्रव्य शुद्धि से द्रव्य दान दे, अखती-पर्व मनाएँ।
वृषभनाथ को करके नमोऽस्तु, सादर अर्घ्य चढ़ाएँ॥

**ॐ ह्रीं णमो सव्वोहि जिणाणंअग्नि-आपद-विनाशक अग्नि-द्रव्यशुद्धि योग्य अक्षयतृतीया पर्वप्रदाता श्री वृषभनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥४॥**

आगम विधि से तन वस्त्रों की, दाता शुद्धि बना के।
**कर्त्ता शुद्धि** योग्य कार्य कर, निज कर्तव्य निभाके॥
द्रव्यशुद्धि से द्रव्य दान दे, अखती-पर्व मनाएँ।
वृषभनाथ को करके नमोऽस्तु, सादर अर्घ्य चढ़ाएँ॥

**ॐ ह्रीं णमो अणंतोहि जिणाणं कर्त्ता-आपद-विनाशक कर्त्ता-द्रव्यशुद्धि योग्य अक्षयतृतीया पर्वप्रदाता श्री वृषभनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥५॥**

**सूर्य प्रकाश** वहाँ आता हो, दाता-पात्र जहाँ हो।
प्रकाश के अनुसार बनाना, शुभ आहार वहाँ हो॥

क्षेत्रशुद्धि से द्रव्य दान दे, अखती-पर्व मनाएँ।
वृषभनाथ को करके नमोऽस्तु, सादर अर्घ्य चढ़ाएँ॥

**ॐ ह्रीं णमो कोट्ठबुद्धीणं प्रकाश-आपद-विनाशक प्रकाश-क्षेत्रशुद्धि-योग्य अक्षयतृतीया पर्वप्रदाता श्री वृषभनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥६॥**

शुद्ध वायु प्राकृतिक होवै, दाता-पात्र जहाँ हो।
**वायु शुद्धि** वह योग्य बनाना, शुभ आहार वहाँ हो॥
क्षेत्रशुद्धि से द्रव्य दान दे, अखती-पर्व मनाएँ।
वृषभनाथ को करके नमोऽस्तु, सादर अर्घ्य चढ़ाएँ॥

**ॐ ह्रीं णमो बीजबुद्धीणं वायु-आपद-विनाशक वायु-क्षेत्रशुद्धि-योग्य अक्षयतृतीया पर्वप्रदाता श्री वृषभनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥७॥**

आवागमन वहाँ न होवे, दाता-पात्र जहाँ हो।
**गमन शुद्धि** वह योग्य बनाना, शुभ आहार वहाँ हो॥
क्षेत्रशुद्धि से द्रव्य दान दे, अखती-पर्व मनाएँ।
वृषभनाथ को करके नमोऽस्तु, सादर अर्घ्य चढ़ाएँ॥

**ॐ ह्रीं णमो पदाणुसारीणं आवागमन-आपद-विनाशक आवागमन-क्षेत्र शुद्धि-योग्य अक्षयतृतीया पर्वप्रदाता श्री वृषभनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥८॥**

हिंसा मैल गंदगी ना हो, दाता-पात्र जहाँ हो।
**हिंसा शुद्धि** बनाना हमको, शुभ आहार वहाँ हो॥
क्षेत्रशुद्धि से द्रव्य दान दे, अखती-पर्व मनाएँ।
वृषभनाथ को करके नमोऽस्तु, सादर अर्घ्य चढ़ाएँ॥

**ॐ ह्रीं णमो संभिण्णसोदाराणं हिंसा-आपद-विनाशक हिंसा-क्षेत्रशुद्धि-योग्य अक्षयतृतीया पर्वप्रदाता श्री वृषभनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥९॥**

रात न हो जब पात्र-दान दो, या आहार बना हो।
**रात्रि शुद्धि** बनाना हमको, शुभ आहार वहाँ हो॥

काल शुद्धि से द्रव्य दान दे, अखती-पर्व मनाएँ।
वृषभनाथ को करके नमोऽस्तु, सादर अर्घ्य चढ़ाएँ॥

**ॐ ह्रीं णमो सयंबुद्धाणं रात्रि-आपद-विनाशक रात्रि-कालशुद्धि-योग्य अक्षयतृतीया पर्वप्रदाता श्री वृषभनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥१०॥**

ग्रहण न हो जब पात्र दान दो, या आहार बना हो।
**ग्रहण शुद्धि** बनाना हमको, शुभ आहार वहाँ हो॥
काल शुद्धि से द्रव्य दान दे, अखती-पर्व मनाएँ।
वृषभनाथ को करके नमोऽस्तु, सादर अर्घ्य चढ़ाएँ॥

**ॐ ह्रीं णमो पत्तेयबुद्धाणं ग्रहण-आपद-विनाशक ग्रहण-कालशुद्धि-योग्य अक्षयतृतीया पर्वप्रदाता श्री वृषभनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥११॥**

शोक न हो जब पात्र दान दो, या आहार बना हो।
**शोक शुद्धि** वह हमें बनाना, शुभ आहार वहाँ हो॥
काल शुद्धि से द्रव्य दान दे, अखती-पर्व मनाएँ।
वृषभनाथ को करके नमोऽस्तु, सादर अर्घ्य चढ़ाएँ॥

**ॐ ह्रीं णमो बोहियबुद्धाणं शोक-आपद-विनाशक शोक-कालशुद्धि-योग्य अक्षयतृतीया पर्वप्रदाता श्री वृषभनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥१२॥**

शोर न हो जब पात्र दान दो, या आहार बना हो।
**शोर शुद्धि** वह हमें बनाना, शुभ आहार वहाँ हो॥
काल शुद्धि से द्रव्य दान दे, अखती-पर्व मनाएँ।
वृषभनाथ को करके नमोऽस्तु, सादर अर्घ्य चढ़ाएँ॥

**ॐ ह्रीं णमो उजुमदीणं जन्म विकृति शोर-आपद-विनाशक शोर-काल शुद्धि-योग्य अक्षयतृतीया पर्वप्रदाता श्री वृषभनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥१३॥**

स्नेह रखो जब पात्र दान दो, या आहार बना हो।
**स्नेह शुद्धि** वह हमें बनाना, शुभ आहार वहाँ हो॥

भाव शुद्धि से द्रव्य दान दे, अखती-पर्व मनाएँ।
वृषभनाथ को करके नमोऽस्तु, सादर अर्घ्य चढ़ाएँ॥

**ॐ ह्रीं णमो विउलमदीणं स्नेह विकृति-आपद-विनाशक स्नेह-भावशुद्धि-योग्य अक्षयतृतीया पर्वप्रदाता श्री वृषभनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥१४॥**

दया रखो जब पात्र दान दो, या आहार बना हो।
**दया शुद्धि** वह हमें बनाना, शुभ आहार वहाँ हो॥
भाव शुद्धि से द्रव्य दान दे, अखती-पर्व मनाएँ।
वृषभनाथ को करके नमोऽस्तु, सादर अर्घ्य चढ़ाएँ॥

**ॐ ह्रीं णमो दसपुव्वीणं दया-विकृति-आपद-विनाशक दया-भावशुद्धि-योग्य अक्षयतृतीया पर्वप्रदाता श्री वृषभनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥१५॥**

विनय रखो जब पात्र दान दो, या आहार बना हो।
**विनय शुद्धि** वह हमें बनाना, शुभ आहार वहाँ हो॥
भाव शुद्धि से द्रव्य दान दे, अखती-पर्व मनाएँ।
वृषभनाथ को करके नमोऽस्तु, सादर अर्घ्य चढ़ाएँ॥

**ॐ ह्रीं णमो चउदसपुव्वीणं विनय विकृति-आपद- विनाशक विनय-भाव शुद्धि-योग्य अक्षयतृतीया पर्वप्रदाता श्री वृषभनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥१६॥**

धर्म समझकर पात्र दान दो, या आहार बना हो।
**दान शुद्धि** वह हमें बनाना, शुभ आहार वहाँ हो॥
भाव शुद्धि से द्रव्य दान दे, अखती-पर्व मनाएँ।
वृषभनाथ को करके नमोऽस्तु, सादर अर्घ्य चढ़ाएँ॥

**ॐ ह्रीं णमो विउव्वणपत्ताणं धर्मकर्तव्य-विकृति-आपद-विनाशक धर्म-भावशुद्धि-योग्य अक्षयतृतीया पर्वप्रदाता श्री वृषभनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥१७॥**

### नवधा भक्ति अर्घ्य

श्रावक बनकर व्रत पालन कर, गुरु आह्वानन करना।
भाव भक्ति से गद्‌गद् होकर परिक्रमा भी करना॥

**पड़गाहन** इस प्रथम भक्ति से, अखती-पर्व मनाएँ।
वृषभनाथ को करके नमोऽस्तु, सादर अर्घ्य चढ़ाएँ॥

**ॐ ह्रीं णमो विज्जाहराणं पड़गाहन भक्ति-उपदेशक अक्षयतृतीया पर्वप्रदाता श्री वृषभनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥१८॥**

पड़गाहन कर सद्गुरुओं को, चौके में ले आना।
फिर प्रासुक शुद्धासन देकर, सादर उन्हें बिठाना॥
**उच्चासन** इस दूजि भक्ति से, अखती-पर्व मनाएँ।
वृषभनाथ को करके नमोऽस्तु, सादर अर्घ्य चढ़ाएँ॥

**ॐ ह्रीं णमो अट्ठंगमहाणिमित्तकुसलाणं उच्चासन भक्ति-उपदेशक अक्षयतृतीया पर्वप्रदाता श्री वृषभनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥१९॥**

खुशी-खुशी फिर प्रासुक जल से, गुरु के चरण पखारो।
घृणा त्यागकर चरणोदक ले, अपना भाग्य सँवारो॥
**पद-प्रक्षालन** तीजि भक्ति से, अखती-पर्व मनाएँ।
वृषभनाथ को करके नमोऽस्तु, सादर अर्घ्य चढ़ाएँ॥

**ॐ ह्रीं णमो चारणाणं पादप्रक्षालन भक्ति-उपदेशक अक्षयतृतीया पर्वप्रदाता श्री वृषभनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥२०॥**

अष्ट द्रव्य से झूम-झूम के, गुरुओं के गुण गाओ।
निज घर में गुरुवर को पाके, पूजन पाठ रचाओ॥
**गुरु-पूजन** इस चतुर भक्ति से, अखती-पर्व मनाएँ।
वृषभनाथ को करके नमोऽस्तु, सादर अर्घ्य चढ़ाएँ॥

**ॐ ह्रीं णमो पण्णसमणाणं गुरुपूजन भक्ति-उपदेशक अक्षयतृतीया पर्वप्रदाता श्री वृषभनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥२१॥**

पूजन कर फिर बैठ गवासन, गुरु को टेको माथा।
नमोऽस्तु को आशीष गुरु दें, उच्च उठा के हाथा॥

**प्रणाम** इस पंचम भक्ति से, अखती-पर्व मनाएँ।
वृषभनाथ को करके नमोऽस्तु, सादर अर्घ्य चढ़ाएँ॥

**ॐ ह्रीं णमो आगासगामीणं प्रणाम भक्ति-उपदेशक अक्षयतृतीया पर्वप्रदाता श्री वृषभनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥२२॥**

रागद्वेष भय मोह मान की, सारी गाँठें खोलो।
फिर आहार दान के पहले, मन की शुद्धि बोलो॥
**मन-शुद्धि** षष्ठम भक्ति से, अखती-पर्व मनाएँ।
वृषभनाथ को करके नमोऽस्तु, सादर अर्घ्य चढ़ाएँ॥

**ॐ ह्रीं णमो आसीविसाणं मनःशुद्धि भक्ति-उपदेशक अक्षयतृतीया पर्वप्रदाता श्री वृषभनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥२३॥**

कलह-विरह के शब्द न बोलो, हित-मित आगम वाणी।
मिश्री मिश्रित कोयल जैसी, कर्णप्रिय कल्याणी॥
**वचन-शुद्धि** सप्तम भक्ति से, अखती-पर्व मनाएँ।
वृषभनाथ को करके नमोऽस्तु, सादर अर्घ्य चढ़ाएँ॥

**ॐ ह्रीं णमो दिट्ठिविसाणं वचनशुद्धि भक्ति-उपदेशक अक्षयतृतीया पर्वप्रदाता श्री वृषभनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥२४॥**

प्रासुक जल से स्नान करके, तन को शुद्ध बनाना।
जैनों का परिधान पहनकर, अनुशासित हो जाना॥
**काय-शुद्धि** अष्टम भक्ति से, अखती-पर्व मनाएँ।
वृषभनाथ को करके नमोऽस्तु, सादर अर्घ्य चढ़ाएँ॥

**ॐ ह्रीं णमो उग्गतवाणं कायशुद्धि भक्ति-उपदेशक अक्षयतृतीया पर्वप्रदाता श्री वृषभनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥२५॥**

हो प्रासुक भोजन सामग्री, जो मर्यादा वाली।
नव कोटि से शुद्ध बनाना, धर्मवृद्धि तप वाली॥

नवमी **जल-आहार-शुद्धि** से, अखती-पर्व मनाएँ।
वृषभनाथ को करके नमोऽस्तु, सादर अर्घ्य चढ़ाएँ॥

**ॐ ह्रीं णमो दित्ततवाणं आहार-जलशुद्धि भक्ति-उपदेशक अक्षयतृतीया पर्वप्रदाता श्री वृषभनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥२६॥**

## राजा श्रेयांस के सप्त स्वप्न

**(चौपाई)**

**सुमेरुपर्वत** पहला सपना, घर आए प्रभु जी को जपना।
श्रेयांस् राजा सम हम पूजें, वृषभनाथ को नमोऽस्तु गूँजें॥

**ॐ ह्रीं णमो तत्ततवाणं शुभमांगलिक उच्चस्वप्न-सहित अक्षयतृतीया पर्वप्रदाता श्री वृषभनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥२७॥**

**कल्पवृक्ष** था दूजा सपना, सभी भोग देगा प्रभु अपना।
श्रेयांस् राजा सम हम पूजें, वृषभनाथ को नमोऽस्तु गूँजें॥

**ॐ ह्रीं णमो महातवाणं कल्पवृक्ष समान धनधान्य-सहित अक्षयतृतीया पर्वप्रदाता श्री वृषभनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥२८॥**

तीजा सपना **सिंह** निहारे, कर्म विनाशक नाथ! हमारे।
श्रेयांस् राजा सम हम पूजें, वृषभनाथ को नमोऽस्तु गूँजें॥

**ॐ ह्रीं णमो घोरतवाणं सिंहवृत्ति-समान अक्षयतृतीया पर्वप्रदाता श्री वृषभनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥२९॥**

चौथा सपना **बैल** निहारे, धार्मिक होंगे देव! हमारे।
श्रेयांस् राजा सम हम पूजें, वृषभनाथ को नमोऽस्तु गूँजें॥

**ॐ ह्रीं णमो घोरगुणाणं धार्मिकवृत्ति-सहित अक्षयतृतीया पर्वप्रदाता श्री वृषभनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥३०॥**

पंचम सपना **सूरज चंदा**, केवलज्ञानी नाथ! जिनंदा।
श्रेयांस् राजा सम हम पूजें, वृषभनाथ को नमोऽस्तु गूँजें॥

**ॐ ह्रीं णमो घोरपरक्कमाणं ज्ञानधन-सहित अक्षयतृतीया पर्वप्रदाता श्री वृषभनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥३१॥**

छठवाँ सपना दिखा **समुंदर**, अनन्त गुण प्रभु धरे दिगंबर।
श्रेयांस् राजा सम हम पूजें, वृषभनाथ को नमोऽस्तु गूँजें॥
**ॐ ह्रीं णमोऽघोरगुणबंभयारीणं ऋद्धि-सिद्धिगुण-सहित अक्षयतृतीया पर्वप्रदाता श्री वृषभनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥३२॥**

**मंगलद्रव्य** स्वप्न था सप्तम, जगत पूज्य हो जिन परमातम।
श्रेयांस् राजा सम हम पूजें, वृषभनाथ को नमोऽस्तु गूँजें॥
**ॐ ह्रीं णमो आमोसहिपत्ताणं सम्पूर्ण-सफलता-सहित अक्षयतृतीया पर्वप्रदाता श्री वृषभनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥३३॥**

**दाता के सात गुण**

मुनिवर का आहार प्रदाता, **श्रद्धालु** हो धार्मिक ज्ञाता।
अक्षय-तीजा हम भी पूजें, वृषभनाथ को नमोऽस्तु गूँजें॥
**ॐ ह्रीं णमो खेल्लोसहिपत्ताणं श्रद्धा-गुणमण्डित अक्षयतृतीया पर्वप्रदाता श्री वृषभनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥३४॥**

अपनी **शक्ति** नहीं छिपाना, मुनियों का आहार कराना।
अक्षय-तीजा हम भी पूजें, वृषभनाथ को नमोऽस्तु गूँजें॥
**ॐ ह्रीं णमो जल्लोसहिपत्ताणं शक्ति-गुणमण्डित अक्षयतृतीया पर्वप्रदाता श्री वृषभनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥३५॥**

अपनी **भक्ति** दिखा दिखा के, मुनियों के आहार करा के।
अक्षय-तीजा हम भी पूजें, वृषभनाथ को नमोऽस्तु गूँजें॥
**ॐ ह्रीं विप्पोसहिपत्ताणं नमनभक्ति-गुणमण्डित अक्षयतृतीया पर्वप्रदाता श्री वृषभनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥३६॥**

जिन **विज्ञान** सदा ही पालो, धर विवेक जिन धर्म संभालो।
अक्षय-तीजा हम भी पूजें, वृषभनाथ को नमोऽस्तु गूँजें॥
**ॐ ह्रीं णमो सव्वोसहिपत्ताणं विज्ञान-गुणमण्डित अक्षयतृतीया पर्वप्रदाता श्री वृषभनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥३७॥**

**क्षुब्ध न** हों गल्ती होने पर, दुखी नहीं होना रोने पर।
अक्षय-तीजा हम भी पूजें, वृषभनाथ को नमोऽस्तु गूँजें॥

**ॐ ह्रीं णमो मणबलीणं अक्षुब्धता-गुणमण्डित अक्षयतृतीया पर्वप्रदाता श्री वृषभनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥३८॥**

क्रोध न करना **क्षमा** धारना, अपनी नैया पार तारना।
अक्षय-तीजा हम भी पूजें, वृषभनाथ को नमोऽस्तु गूँजें॥

**ॐ ह्रीं णमो वचिबलीणं क्षमा-गुणमण्डित अक्षयतृतीया पर्वप्रदाता श्री वृषभनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥३९॥**

अपनी शक्ति नहीं छिपाना, द्रव्य **त्याग** आहार कराना।
अक्षय-तीजा हम भी पूजें, वृषभनाथ को नमोऽस्तु गूँजें॥

**ॐ ह्रीं णमो कायबलीणं त्याग-गुणमण्डित अक्षयतृतीया पर्वप्रदाता श्री वृषभनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥४०॥**

### पंचाश्चर्य

(हाकलिका)

वहाँ **रत्नवर्षा** होती, जहाँ प्रभु चर्या होती।
वृषभनाथ की कर पूजा, भजें-भजें अक्षय-तीजा॥

**ॐ ह्रीं णामो खीरसवीणं रत्नवृष्टि-आश्चर्य गुणमण्डित अक्षयतृतीया पर्वप्रदाता श्री वृषभनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥४१॥**

वहाँ **पुष्पवर्षा** होती, जहाँ प्रभु चर्या होती।
वृषभनाथ की कर पूजा, भजें-भजें अक्षय-तीजा॥

**ॐ ह्रीं णमो सप्पिसवीणं पुष्पवृष्टि-आश्चर्य गुणमण्डित अक्षयतृतीया पर्वप्रदाता श्री वृषभनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥४२॥**

वहाँ **दिव्य-सुरनाद** हुए, जहाँ प्रभु आहार हुए।
वृषभनाथ की कर पूजा, भजें-भजें अक्षय-तीजा॥

**ॐ ह्रीं णमो महुरसवीणं दिव्यसुरनाद-आश्चर्य गुणमण्डित अक्षयतृतीया पर्वप्रदाता श्री वृषभनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥४३॥**

**मंद-सुगंधित-पवन** बहे, जहाँ प्रभु आहार हुए।
वृषभनाथ की कर पूजा, भजें-भजें अक्षय-तीजा॥

**ॐ ह्रीं णमो अमियसवीणं मंदसुगंधितपवन-आश्चर्य गुणमण्डित अक्षयतृतीया पर्वप्रदाता श्री वृषभनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥४४॥**

दान पात्र दा **धन्य** हुए, जहाँ प्रभु आहार हुए।
वृषभनाथ की कर पूजा, भजें-भजें अक्षय-तीजा॥

**ॐ ह्रीं णमो अखीणमहाणसाणं धन्य! धन्य!-आश्चर्य गुणमण्डित अक्षयतृतीया पर्वप्रदाता श्री वृषभनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥४५॥**

सम्यग्दर्शन-धारी जो, पूजें मुनि अनगारी को।
वृषभनाथ की कर पूजा, भजें-भजें अक्षय-तीजा॥

**ॐ ह्रीं णमो लोएसव्वसिद्धायदणाणं सम्यग्दर्शन गुणमण्डित अक्षयतृतीया पर्वप्रदाता श्री वृषभनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥४६॥**

सम्यग्ज्ञानम्-धारी जो, पूजें मुनि अनगारी को।
वृषभनाथ की कर पूजा, भजें-भजें अक्षय-तीजा॥

**ॐ ह्रीं णमो वड्ढमाणाणं सम्यग्ज्ञान गुणमण्डित अक्षयतृतीया पर्वप्रदाता श्री वृषभनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥४७॥**

सम्यक्चारित-धारी जो, पूजें मुनि अनगारी को।
वृषभनाथ की कर पूजा, भजें-भजें अक्षय-तीजा॥

**ॐ ह्रीं णमो लोएसव्वसाहूणं सम्यक्चारित्र गुणमण्डित अक्षयतृतीया पर्वप्रदाता श्री वृषभनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥४८॥**

**पूर्णार्घ्य** (शंभू)

जब एक वर्ष से भी ज्यादा, श्री वृषभनाथ को गुजर गया।
तब अक्षय तीजा को उनका, इक्षु रस से आहार हुआ॥
श्रेयांश सोम का पुण्य जगा, तब दान तीर्थ त्यौहार मिला।
सो मुनियों का पड़गाहन कर, जिनधर्म चला उपहार मिला॥

(दोहा)

वृषभनाथ का इक्षु रस, अन्यों का क्षीरान्न।
मुनियों की हो पारणा, षट् रस से सामान्य॥
विधि दाता वा पात्र से, होता दान विशेष।
नवधा भक्ति से भजें, सुव्रत विद्या शेष॥

**ॐ ह्रीं दान तीर्थ अक्षयतृतीया पर्वप्रदाता श्री वृषभनाथ-जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं...।**

**जाप्यमंत्र—ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री वृषभनाथजिनेन्द्राय नमो नमः।**

## जयमाला

(दोहा)

अक्षय तीजा पर्व सा, करके मंगल दान।
अक्षय आतम प्राप्ति को, हो नमोऽस्तु गुणगान॥

(ज्ञानोदय)

जय हो! जय हो! आदिनाथ की, दान तीर्थ की जय-जय हो।
जय हो! जय हो! अक्षय-तीजा, चार दान की जय-जय हो॥
आदिनाथ जब बने तपस्वी, छह मासिक उपवास किए।
तज उपवास गए भोजन को, तो विधि बिन वह लौट लिए॥१॥
वर्धमान चर्या के धारी, पुनः मौन ध्यानस्थ हुए।
विधि का ज्ञान न भक्तों को था, अतः दुखी सब भक्त हुए॥
कैसे हो आहार प्रभु का, भरत सोचते बाहुबली।
तेरह माह नवों दिन गुजरे, कोई युक्ति नहीं चलीं॥२॥
इधर क्षयोपशम अन्तराय का, उधर हस्तिनापुर नृप को।
सात स्वप्न यों क्रमिक दिखे थे, स्वर्णिम मेरु कल्पतरु को॥
सिंह बैल रवि शशि सागर फिर, दिखी देवियाँ द्रव्य लिए।
जान स्वप्न फल पड़गाहन को, द्वाराप्रेक्षण शीघ्र किए॥३॥

श्री श्रेयांस सोम नृप करते, आदि प्रभु का पड़गाहन।
नवधा भक्ति करें खुशी से, दें इक्षुरस कर शोधन॥
वज्रजंघ श्रीमति के भव के, दान पुण्य होते अब धन्य।
पंचाश्चर्य प्रकट होते हैं, दान पात्र दाता हो धन्य॥४॥
रत्नवृष्टि हो, पुष्पवृष्टि हो, ढोल नगाड़े बाज उठे।
पवन सुगंधित सुर-सुर ढुरके, महा दान सब बोल उठे॥
अहो! दान यह धन्य! दान यह, नभ में जय-जय गूँज उठे।
अक्षय-तीजा धन्य हो गयी, सभी भक्त हम पूज उठे॥५॥
औषध-शास्त्र-अभय-आहारा, चार तरह का दान करें।
दाता पात्र द्रव्य विधि जाने, आतम का कल्याण करें॥
जड़ धन वैभव नाशवान है, देकर दान अमर हो लो।
अक्षय-तीजा पर्व मनाकर, आदिनाथ की जय बोलो॥६॥
जोड़-जोड़ के जो रखता है, उसके धन में जंग लगे।
गाढ़-गाढ़ के जो रखता है, उसको सर्प भुजंग लगे॥
खाता-पीता जो रहता है, उसका धन तो अंग लगे।
अपने धन का दान करे जो, भव-भव में वह संग लगे॥७॥
अतः कमाओ धर्म नीति से, खर्च रीति से धन करना।
भोग भोगना सदा भीति से, दान प्रीति से सब करना।
तो जिनशासन तीर्थ चलेगा, ऋद्धि-सिद्धि हो जीवन में।
'सुव्रत' अपना धर्म निभाएँ, सदा रमें निज चेतन में॥८॥

(सोरठा)

अक्षय-तीजा पर्व, देता यह संदेश है।
त्यागो जड़ धन सर्व, सिद्धों सा निज देश है॥

**ॐ ह्रीं दान तीर्थ अक्षयतृतीया पर्वप्रदाता श्री वृषभनाथ-जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं...।**

(दोहा)

वृषभनाथ स्वामी करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शान्तये शान्तिधारा)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, आदिनाथ जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

## महाऽर्घ्य

(हरिगीतिका)

अर्हंत सिद्धाचार्य आदि, देव परमेष्ठी भजें।
रत्नत्रयी दसधर्म पूजें, भावना सोलह भजें॥
कृत्रिम अकृत्रिम बिम्ब आलय, हम भजें त्रयलोक के।
अनुयोग चारों तीर्थ पाँचों, पूजते हम ढोक दे॥
प्रभु नाम कल्याणक भजें, नंदीश्वरा मेरु भजें।
श्री सिद्ध-अतिशयक्षेत्र पूजें, तीस चौबीसी भजें॥
मन से वचन से काय से हम, जैनशासन पूजते।
जिन पूजकर निज प्राप्ति हेतु, चेतना सुख खोजते॥

(दोहा)

सर्व पूज्य को हम भजें, आत्मसिद्धि के काज।
महा अर्घ्य ले पूजते, करके नमोऽस्तु आज॥

**ॐ ह्रीं भावपूजा-भाववन्दना-त्रिकालपूजा-त्रिकालवन्दना-कृत-कारित-अनुमोदना-विषये श्री अर्हंत-सिद्ध-आचार्य-उपाध्याय-सर्वसाधु-रूप-पंचपरमेष्ठिभ्यो नमः। प्रथमानुयोग-करणानुयोग-चरणानुयोग-द्रव्यानुयोग-रूप-द्वादशांग-जिनागमेभ्यो नमः। उत्तमक्षमादि-दशलक्षण-धर्मेभ्यो नमः। दर्शनविशुद्ध्यादि-षोडशकारणेभ्यो नमः। सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्रेभ्यो नमः। उर्ध्वलोक-मध्यलोक-अधोलोक-संबंधिनः-त्रिलोक-स्थित-कृत्रिम-अकृत्रिम-जिनबिम्बेभ्यो नमः। विदेहक्षेत्र-स्थित-विद्यमान-**

विंशति-तीर्थंकरेभ्यो नमः। पंचभरत-पंचऐरावत-दशक्षेत्र-संबंधिनः त्रिंशत्-चतुर्विंशति-संबंधिनः-सप्तशतक-विंशति तीर्थंकरेभ्यो नमः। नंदीश्वरद्वीप-संबंधिनः-द्विपञ्चाशत्-जिनालयस्थ-पंचसहस्त्र-षट्शतक-षोडश-जिनबिम्बेभ्यो नमः। पञ्चमेरु-सम्बधी-अशीति जिनालयस्थ-अष्टसहस्त्र-षट्शतक-चत्वारिंशत्-जिनबिम्बेभ्यो नमः। श्रीसम्मेदशिखर-अष्टापद-गिरनार-चम्पापुर-पावापुर-कुंडलपुर- पवाजी-सोनागिरादि-सिद्धक्षेत्रेभ्यो नमः।जैनबद्री-मूढ़बद्री-हस्तिनापुर-तिजारा-पद्मपुरा-महावीरजी-खंदारजी-चंदेरी-हाटकापुरा-आदि-अतिशयक्षेत्रेभ्यो नमः। श्री चारणऋद्धिधारी सप्तऋषिभ्यो नमः। श्रीवृषभादि-वीरान्त-चतुर्विंशति-तीर्थंकरादि-नवदेवता-जिनसमूहेभ्यो नमः।

**ॐ ह्रीं श्रीमतं भगवंतं कृपालसंतं श्री वृषभादि-वीरांतान् चतुर्विंशति तीर्थंकर आद्यानांआद्ये जम्बूद्वीपे-भरतक्षेत्रे-आर्यखण्डे-भारतदेशे-मध्यप्रदेशे-.....जिलान्तर्गते.....मासोत्तममासे.....मासे.....पक्षे....तिथौ....वासरे..मुनि-आर्यकाणां-श्रावकश्राविकाणां सकलकर्मक्षयार्थं जलादि-महाऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।**

## शान्तिपाठ

(हरीगीतिका)

हम इन्द्र चक्री तो नहीं बस, मूढ़ जैसे भक्त हैं।
धन ज्ञान वा सम्यक् क्रिया की, शास्त्र विधि से रिक्त हैं॥
बस आपके श्रद्धालु हैं हम, भक्ति को मजबूर हों।
सो गल्तियाँ होना सहज हैं, जो क्षमा से दूर हों॥
तुम तो क्षमा अवतार हो, प्रभु दान दो उत्तम क्षमा।
तो हम क्षमाधारी बनें कुछ, पुण्य पूजा से कमा॥
जब तक क्षमा का धाम निज में, ना मिले विश्राम तो।
तब तक मिले अर्हंत शरणा, सिद्ध प्रभु का ध्यान हो॥

(दोहा)

परमेष्ठी नवदेवता, चौबीसों भगवान।
पाप हरें सुख शान्ति दें, करें विश्व कल्याण॥

(शान्तये शान्तिधारा...) (जल की धारा करें)

अपने उर में बह उठे, विश्व शान्ति की धार।
कर्मों के ग्रह शान्ति को, नमोऽस्तु बारम्बार॥

(शान्तये शान्तिधारा...) (चंदन की धारा करें)

(हरीगीतिका)

अभ्यास शास्त्रों का करें, निर्ग्रन्थ गुरु की अर्चना।
हो विश्व शान्ति आत्म शान्ति, पूर्ण हो यह प्रार्थना॥
हों रोग ना व्याधि किसी को, खेद ना दुख कष्ट हों।
मौसम सदा अनुकूल होवे, जीव ना पथ भ्रष्ट हों॥

(दोहा)

परमेष्ठी का मंत्र जो, महामंत्र णमोकार।
हम सब मिलकर अब यहाँ, मंत्र जपें नौ बार॥

(पुष्पांजलिं... कायोत्सर्गं...)

## विजर्सन पाठ

(दोहा)

ज्ञान और अज्ञान से, रही भूल जो नाथ।
आगम-विधि वो पूर्ण हो, पाकर तेरा हाथ॥
मंत्रादिक से हीन मैं, नहिं पूजन का ज्ञान।
मुझे क्षमा कर दीजिये, चरण शरण का दान॥
शीश झुकाऊँ आज मैं, हो पूजा सम्पन्न।
पाप हरो मंगल करो, करो मुझे प्रभु धन्य॥

**ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा अर्हदादि-परमेष्ठिनः पूजाविधिं विसर्जनं करोमि। अपराध-क्षमापणं भवतु। यः यः यः।**

**(उक्त मंत्र पढ़कर ठोने पर पुष्प क्षेपण कर विसर्जन करें।)**

श्री जिनवर की आशिका, लीजे शीश चढ़ाय।
भव-भव के पातक कटें, दुःख दूर हो जाय॥

(नौ बार णमोकार मंत्र का जाप)

## जाकर आते हैं (भजन-स्तुति)

जाकर आते हैं, भगवन! जाकर आते हैं।
पुनः आपके दर्शन को हम, जाकर आते हैं॥
सदा आपके चरणों में हम, रहना तो चाहें।
किन्तु पाप की मजबूरी से, हम ना रह पाएँ॥
पाप घटाने पुण्य बढ़ाने, फिर से आते हैं।
पुनः आपके दर्शन को हम, जाकर आते हैं॥१॥
दुनियाँ हमें कभी ना रुचती, इसे छोड़ना हैं।
माया ममता के हर बंधन, हमें तोड़ना है॥
सदा आपके साथ रहें ये, भाव बनाते हैं।
पुनः आपके दर्शन को हम, जाकर आते हैं॥२॥
यह आना-जाना भगवन् अब, हमें न करना है।
सदा आपकी छत्र-छाँव में, अब तो रहना है॥
जीते मरते हरदम 'सुव्रत', भूल न पाते हैं।
पुनः आपके दर्शन को हम, जाकर आते हैं॥३॥
दर्शन बिना आपके प्रभु हम, चैन न पाएँगे।
बिना आपके नयन हमारे, आँसु बहाएँगे॥
बिन माता के बच्चे जैसे, रह ना पाते हैं।
पुनः आपके दर्शन को हम, जाकर आते हैं॥४॥
सदा आपके दर्शन पाएँ, यही भावना है।
चरणों में स्थान मिले बस, यही प्रार्थना है॥
अपने जैसा हमें बना लो, आश लगाते हैं।
पुनः आपके दर्शन को हम, जाकर आते हैं॥५॥

===